

6. ILLUSTRATIONS OF THE HARIVAMSA PURANA: SOCIAL SIGNIFICANCE (हरिवंश पुराण का चित्रांकन: सामाजिक महत्व)

Ranjana Jangid^a* Dr. Ritu Johari^a

^a Researcher, Fine Arts and Painting, Jai Narain Vyas University, Jodhpur

^a Research Supervisor, Dr. Ritu Johari, Assistant Professor, Fine Arts and Painting, Jai Narain Vyas University, Jodhpur

^a Email: *Jangidranjana1@gmail.com*

Abstract:

In today's globalized world, learning a foreign language is not only an academic pursuit but also a vital skill for personal and professional growth. Charlemagne's quote, "To know two languages is to possess a second soul," highlights the profound impact that language acquisition has on an individual's life. As globalization continues to advance, the ability to speak foreign languages gives students an edge in international exams, scholarships, and career opportunities. Beyond professional advantages, learning a foreign language enhances cognitive and analytical abilities, contributing to improved personality and self-worth. Educational institutions, particularly in places like Dehradun, are recognizing the importance of foreign language education as a means to prepare students for a competitive and interconnected world. Ultimately, proficiency in foreign languages fosters not only better career prospects but also a deeper understanding of diverse cultures and global perspectives.

आज के वैश्वीकरण के दौर में विदेशी भाषा सीखना केवल एक शैक्षिक प्रयास नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल बन गया है। शारलेमेन के कथन, "दो भाषाएँ जानना एक दूसरी आत्मा प्राप्त करना है," यह बताता है कि भाषा अधिग्रहण का व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे वैश्वीकरण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, विदेशी भाषाओं को बोलने की क्षमता छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय परीक्षाओं, छात्रवृत्तियों और करियर के अवसरों में एक फायदा देती है। पेशेवर लाभों के अलावा, एक विदेशी भाषा सीखने से संज्ञानात्मक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं में भी वृद्धि होती है, जिससे व्यक्तित्व और आत्ममूल्य में सुधार होता है। विशेष रूप से देहरादून जैसे स्थानों में शैक्षिक संस्थान विदेशी भाषा शिक्षा के महत्व को समझते हुए छात्रों को प्रतिस्पर्धी और आपस में जुड़ी दुनिया के लिए तैयार करने के तरीके के रूप में इसे स्वीकार कर रहे हैं। अंततः, विदेशी भाषाओं में प्रवीणता केवल बेहतर करियर के अवसरों को ही नहीं बढ़ाती, बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों और वैश्विक दृष्टिकोणों को समझने में भी गहरी मदद करती है।

Keywords: Globalization, Foreign languages, Cognitive development, Career opportunities, Educational systems

वैश्वीकरण, विदेशी भाषाएँ, संज्ञानात्मक विकास, करियर के अवसर, शैक्षिक प्रणालियाँ

* Corresponding author.

'हरिवंश पुराण' भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला ग्रंथ है। इसकी दो प्रमुख परंपराएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पहली परंपरा हिन्दू साहित्यिक परंपरा से जुड़ी है, जिसमें यह महाभारत का अनुपूरक या 'खिल भाग' माना जाता है। इस संस्करण में भगवान विष्णु के अवतारों में से एक, श्रीकृष्ण के वंश का विस्तृत विवरण मिलता है। इसमें कृष्ण के पूर्वजों, उनके परिवार, उनके जीवन प्रसंगों और उनकी वंश-परंपरा को विस्तार से वर्णित किया गया है। दूसरी ओर जैन परंपरा में 'हरिवंश पुराण' आचार्य जिनसेन द्वारा रचित मानी जाती

है। इस ग्रंथ में 22वें तीर्थकर नेमिनाथ का जीवनचित्र प्रमुखता से मिलता है, जिनका संबंध हरिवंश कुल से बताया गया है। साथ ही, नेमिनाथ के समकालीन रहे भगवान् कृष्ण के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंग भी इसमें शामिल हैं, जिससे दोनों परंपराओं के वृष्टिकोण का रोचक समन्वय दिखाई देता है।

इस ग्रंथ के अंतर्गत किए गए चित्रांकन या दृश्य प्रस्तुतीकरण का सामाजिक महत्व भी अत्यंत व्यापक रहा है। जहाँ ग्रंथ का मूल पाठ मुख्यतः पढ़े-लिखे और ज्ञानाभिलाषी वर्ग तक सीमित था, वहीं इसके चित्रों ने कथाओं को व्यापक समाज तक पहुँचाने का कार्य किया। चित्रांकन ने कहानी को केवल आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने की भूमिका नहीं निभाई, बल्कि समाज में नैतिक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों और आदर्श व्यवहार को स्थापित करने का माध्यम भी बना। इन दृश्यों में प्रयुक्त रंगों, प्रतीकों और भावों ने लोगों को कथा की गहराई से जोड़ने में मदद की। इस प्रकार, 'हरिवंश पुराण' के चित्र न केवल एक धार्मिक ग्रंथ के सहायक तत्व थे, बल्कि वे सामाजिक शिक्षा और सांस्कृतिक संप्रेषण का प्रभावशाली उपकरण भी साबित हुए। हरिवंश पुराण भारतीय धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा का ऐसा ग्रंथ है जिसने सदियों से समाज के विचार, आस्था, और व्यवहार को प्रभावित किया है। इस ग्रंथ के प्रसार में चित्रांकन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। चित्रों ने केवल कथाओं को सुशोभित करने का कार्य नहीं किया, बल्कि वे भारतीय समाज के लिए ज्ञान, मूल्य-निर्माण, सामाजिक आदर्शों और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार बने। निम्नलिखित बिंदुओं में इस सामाजिक प्रभाव को विस्तार से समझा जा सकता है।

1. दृश्यात्मक शिक्षा और व्यापक ज्ञान-प्रसार

भारत का बड़ा वर्ग ऐतिहासिक रूप से अशिक्षित या कम शिक्षित रहा है। ऐसे में धार्मिक ग्रंथों को समझना केवल पढ़े-लिखे लोगों तक ही सीमित रह जाता था। हरिवंश पुराण के चित्रांकन ने इस दूरी को बहुत हद तक कम किया।

• निरक्षर जनता के लिए संवाद और शिक्षा का माध्यम

चित्र जटिल दर्शनिक चित्रन और व्यापक पौराणिक कथाओं को सरल दृश्यों के माध्यम से समझाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन गए। जहाँ ग्रंथ का पाठ लिखित रूप में उपलब्ध था, वहीं चित्रों ने इस ज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने का कार्य किया। चित्रकार, कथावाचक और मंदिरों में होने वाले आयोजन इन दृश्यों को जीवंत बनाते थे, जिससे शब्दहीन जनता भी धर्म, इतिहास और समाज के मूल सिद्धांतों से जुड़ पाती थी।

हरिवंश पुराण में वर्णित कथा-क्रम जैसे कृष्ण का जन्म, नेमिनाथ के त्याग-प्रसंग, बलराम के युद्ध या राजवंशों की गाथाएँ—सब कुछ दृश्य-रूप में सरल हो जाता था। इससे धार्मिक और नैतिक शिक्षाएँ भावनात्मक रूप से अधिक प्रभावशाली होकर लोगों के मन में उत्तरती थीं।

• तात्त्विक और नैतिक संदेशों का सजीव चित्रण

धर्म, दान, वीरता, शौर्य और न्याय जैसे सिद्धांत केवल सुनकर या पढ़कर जितने समझ में आते हैं, उससे कहीं अधिक इनका प्रभाव तब पड़ता है जब वे जीवंत दृश्य के रूप में सामने हों। हरिवंश पुराण के चित्र जिस प्रकार चरित्रों को चित्रित करते हैं—वह दर्शकों को इन आदर्शों के प्रति प्रेरित करता था। धर्मवीरता, दानशीलता, कर्तव्यपरायणता जैसे विचारों को प्राप्त करने के लिए चित्रांकन सबसे प्रभावशाली उपकरण बनता था। इस प्रकार चित्र सामाजिक और नैतिक शिक्षा का शक्तिशाली माध्यम रहे।

2. आदर्श चरित्रों का प्रस्तुतीकरण और सामाजिक रोल मॉडल

समाज हमेशा ऐसे आदर्शों की खोज में रहता है, जिनका अनुसरण कर वह एक श्रेष्ठ जीवन की ओर बढ़ सके। हरिवंश पुराण के चित्र उस युग में लोगों के चरित्र-निर्माण के महत्वपूर्ण आधार बने।

• त्याग और वैराग्य के आदर्श का चित्रांकन

जैन परंपरा में नेमिनाथ का जीवन त्याग, करुणा और वैराग्य का सर्वोच्च उदाहरण माना जाता है। उनके विवाह समारोह के दौरान पशुओं की पीड़ा सुनकर संसार छोड़ देने का प्रसंग चित्रांकन में अत्यंत मार्मिक रूप से दर्शाया जाता था।

यह दृश्य लोगों को सांसारिक मोह-माया से विरक्त होकर आत्मिक उन्नति की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता था। त्याग, करुणा और आत्मशुद्धि का संदेश सामान्य जन तक अत्यंत सरलता से पहुँच जाता था।

• कर्तव्य, बल और शौर्य के आदर्श

हरिवंश पुराण के चित्रों में श्रीकृष्ण और बलदेव के बहुआयामी व्यक्तित्व को ऐसे रूप में दिखाया जाता था जो समाज को कर्तव्यपालन, पराक्रम, सत्य और धर्म की रक्षा का संदेश देता था।

उनकी युद्ध-कौशल, नीति-चातुर्य और लोककल्याण की प्रवृत्ति को चित्रों में देखकर राजा और सामान्य नागरिक दोनों ही जीवन में साहस और कर्तव्य-निष्ठा को अपनाने के लिए प्रेरित होते थे।

• परिवार, संबंध और भावनात्मक संवेदनाएँ

कृष्ण के पिता वसुदेव, पुत्र प्रद्युम्न और भानुकुमार के चित्रण परिवार और दंश परंपरा के महत्व को दर्शाते थे।

बलदेव के "कर्ण-विलाप" जैसे मार्मिक दृश्य समाज में संवेदनशीलता, प्रेम, करुणा और भावनात्मक गहराई की महत्ता को स्थापित करते थे। इस प्रकार चित्र न केवल धार्मिक कथाओं का माध्यम थे, बल्कि वे सामाजिक संबंधों की गरिमा को भी प्रकट करते थे।

3. धार्मिक अनुष्ठानों और आस्था का सुट्टीकरण

हरिवंश पुराण का पाठ, श्रवण, पूजा और दान अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। चित्रांकन ने इन अनुष्ठानों की प्रभावशीलता को और अधिक गहरा किया।

• मोक्ष, पवित्रता और पाप-नाश का दृश्यमान आश्वासन

ग्रंथ का श्रवण मोक्ष का मार्ग माना जाता था। मंदिरों और पवित्र स्थलों पर लगे चित्र लोगों को यह अनुभव कराते थे कि वे किसी पवित्र कार्य में सहभागी हो रहे हैं।

चित्रों के दर्शन को भी धर्म-कर्म के समान पवित्र माना जाता था। इससे धार्मिक आस्था और भक्ति की भावना समाज में सुट्ट़ हुई।

• दान-पुण्य और सेवा के विचार को प्रोत्साहन

ग्रंथ में ब्राह्मणों को भोजन कराना, वस्त्र दान, गौ दान और भूमि दान जैसे अनुष्ठानों का वर्णन है।

चित्रों में इन दान-प्रथाओं का विशेष चित्रण होने से समाज में उदारता, सहयोग और सेवा की भावना को बल मिला। गरीब और जरूरतमंद वर्ग को इससे सीधे लाभ मिलते थे, और दान की सामाजिक परंपरा निरंतर फलती-फूलती रही।

• वीर पूजा के दृश्य और उसका जनमानस पर प्रभाव

भारतीय परंपरा में वीर पूजा का स्थान केंद्रीय रहा है। हरिवंश पुराण के चित्र श्रीकृष्ण, बलराम और अन्य महापुरुषों की अद्भुत वीरता को ऐसे प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करते थे कि दर्शक स्वाभाविक रूप से उनसे प्रेरित होते थे।

इन वीर पात्रों के चित्रों ने समाज में साहस, आत्मबल और न्याय की भावना को दृढ़ किया।

4. सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज़ और दैनिक जीवन का दृश्य-दस्तावेज़

हरिवंश पुराण के चित्र केवल धार्मिक कहानी का माध्यम नहीं थे; वे अपने समय के समाज का जीवंत रिकॉर्ड भी थे।

• विवाह, उत्सव और राजसी जीवन का प्रस्तुतीकरण

चित्रों में विवाह समारोह, राजदरबार, उत्सव, युद्ध, यात्राएँ, और लोक-जीवन के विविध रूप दर्शाएँ जाते थे। इनसे उस समय की वेशभूषा, आभूषण, सामाजिक नियम, वास्तुकला, और परंपराओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। कह सकते हैं कि ये चित्र उस युग की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक झलकियों का अमूल्य स्रोत हैं।

• प्रवृत्ति और निवृत्ति के संतुलन का दृश्य रूप

हरिवंश पुराण में आध्यात्मिकता (निवृत्ति) और भौतिक जीवन (प्रवृत्ति) दोनों का समन्वय मिलता है।

चित्रांकन ने इस द्वंद्व को स्पष्ट रूप से दर्शाते हुए यह दिखाया कि जीवन के दोनों पक्ष अपने स्थान पर आवश्यक हैं।

यह समाज के लिए पर्याय बना—कि व्यक्ति परिस्थितियों और अपने स्वभाव के अनुरूप जीवन-मार्ग चुन सकता है।

5. सांस्कृतिक निरंतरता, क्षेत्रीय समन्वय और राष्ट्रीय चेतना

हरिवंश पुराण के चित्र भारत की सांस्कृतिक एकता और विविधता दोनों के प्रतीक बने।

• लोककथाओं और महाभारत-प्रसंगों का समावेश

पुराण में पाण्डवों-कौरवों के प्रसंग भी मिलते हैं।

जब ये कथाएँ चित्रित हुईं तो भारतीय जनमन में एक सांस्कृतिक एकता की भावना उत्पन्न हुई—एक ही कथा-परंपरा कई रूपों में समाज में जीवित रही।

इस प्रकार चित्रों ने राष्ट्रीय संस्कृति को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया।

• कला, साहित्य और क्षेत्रीय परंपराओं का सामंजस्य

हरिवंश पुराण के चित्र राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल, जैन और अन्य स्थानीय शैलियों में विकसित हुए।

प्रत्येक क्षेत्र ने कथा को अपनी कलात्मक पहचान दी—कहीं रंगों का वैभव बढ़ा, कहीं रेखाओं की सूक्ष्मता।

इससे न केवल भारतीय चित्रकला समृद्ध हुई, बल्कि हरिवंश पुराण की कहानियाँ भी विभिन्न सांस्कृतिक रूपों में जीवित रहीं। साहित्यकारों को भी कथानक को विभिन्न क्षेत्रों में अनुकूलित करने में सहायता मिली।

निष्कर्ष

हरिवंश पुराण का चित्रांकन केवल कला-कृति नहीं था, बल्कि भारतीय समाज का दर्पण, शिक्षक, प्रेरक और सांस्कृतिक संरक्षक था।

इन चित्रों ने-

- निरक्षर जनता को ज्ञान दिया,
- आदर्श चरित्रों को जीवंत कर सामाजिक मूल्यों को स्थापित किया,
- धार्मिक आस्था को गहरा किया,
- दान और पुण्य की प्रथाओं को सुदृढ़ किया,
- और भारतीय संस्कृति की निरंतरता को सुरक्षित रखा।

इस प्रकार हरिवंश पुराण के चित्र भारतीय समाज के लिए केवल सौंदर्य का विषय नहीं, बल्कि संस्कृति, शिक्षा, और नैतिकता के समग्र संवाहक रहे हैं।